अध्याय -3

भारत : भौगोलिक विविधता में सांस्कृतिक एकता
(Bharat : Cultural Unity in Geographical Diversity)

पूर्व अध्यायों में हम भारत की भौगोलिक विविधताओं तथा सामाजिक व सांस्कृतिक विशिष्टताओं को जान चुके हैं। इन्हें जानने व समझने के बाद लगता है कि भारत भौगोलिक विविधताओं में कितना धनी है। इन भौगोलिक विविधताओं ने भारतीयों को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरह के क्रिया कलाप करने के लिए प्रेरित किया है। इस कारण विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न तरह के सांस्कृतिक भू-दृश्य दिखाई देते हैं। इस सांस्कृतिक विविधता ने इस देश को बहुआयामी संस्कृति का धनी बनाया है। यही कारण है कि हमारे देश का स्थान विश्व पटल पर सदैव महत्वपूर्ण रहा है।

भौगोलिक परिस्थितियाँ मानव शरीर की संरचना व उसकी सोच दोनों को प्रभावित करता है। भारत में रहने वाले लोग चाहे कन्याकुमारी के निकट के हों या कश्मीर में रहने वाले हों, भौगोलिक कारकों के प्रभाव के कारण उनके रंग-रूप, व कद-काठी में अन्तर है, लेकिन इस देश के प्रति उनका जुड़ाव सर्वत्र एकसा है। इसका कारण है इस देश के लोगों की सोच (दर्शन) अथवा संस्कृति।

सभ्यता-संस्कृति व भूगोल

किसी क्षेत्र की सभ्यता व संस्कृति के निर्माण में उस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। किसी क्षेत्र में रहने वाले लोगों का खान-पान, रहन-सहन, यहाँ तक कि उनका दर्शन भी भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। सभ्यता का विकास मानव की भौतिक आवश्यकताओं के अनुरूप होता है जब कि संस्कृति का निर्माण मानव के आध्यात्मिक विकास के अनुरूप होता है।

भारत में धरातल, जलवायु, वनस्पति, मिट्टी व जल की उपलब्धता के आधार पर बहुत भिन्नताएँ हैं। इन भिन्नताओं ने भारत के सामाजिक ढाँचे को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग रूप दिया है, लेकिन इस देश की संस्कृति व सांस्कृतिक विरासतों ने सभी को सदैव एक सूत्र में पिरोया है।

संस्कृति का अर्थ है संस्कारयुक्त होना, परिष्कृत होना, परिमार्जित होना, परिस्थितियों के अनुसार विवेक का उपयोग कर स्वयं को ढालना तथा ऐसे कार्य व विचार अपनाना जो सृजनात्मक हो, जो स्वयं व दूसरों के लिए जीवनदायी हों।

किसी क्षेत्र की संस्कृति के निर्माण में उस क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। यह प्रभाव खान-पान, चिकित्सा पद्धति, रहन-सहन आदि पर प्रत्यक्ष रूप से एवं मेलों, त्यौहारों, भाषा, साहित्य, धर्म व दर्शन पर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। इस प्रभाव को अलग-अलग क्षेत्रों में देखा व अनुभव किया जा सकता है। भूगोल का प्रभाव सभ्यता व संस्कृति के विभिन्न तत्वों पर किस तरह से पड़ता है इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है -

1. खान-पान - भारत के खान-पान में भूगोल का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भारत में विभिन्न तरह की जलवायु, मिट्टियाँ व अन्य परिस्थितियाँ हैं। इसी के अनुरूप भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग कृषि उत्पाद पैदा होते हैं, जैसे - खाद्यान्नों में जहाँ उष्ण व नम जलवायु है एवं पर्याप्त जल उपलब्ध है वहाँ चावल, शीतोष्ण क्षेत्रों में गेहूँ, जहाँ जल की कमी है वहाँ बाजरा व जहाँ जल सामान्यत: उपलब्ध है वहाँ मक्का व ज्वार की कृषि की जाती है।

खाद्यान्नों की यह विविधता भौगोलिक विविधता की देन है, लेकिन सांस्कृतिक रूप से परिष्कृत होना इस बात का प्रमाण है कि भारत की पहचान शाकाहारी समाज के रूप में है। जो इस देश के **जीयो व जीने दो** के विचारों के अनुरूप है। शाकाहार को अपनाने वाले लोग देश के सभी क्षेत्रों में रहते हैं। विश्व खाद्य संगठन ने भी शाकाहार को सर्वोत्तम भोजन पद्धति माना है। अब पाश्चात्य समाज भी इसे अपनाने की ओर अग्रसर है। भारतीय भोजन में दूध को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसमें भी

गाय के दूध को प्रथम स्थान पर माना गया है। यही कारण है कि पूरे देश में गाय को माँ का स्थान प्राप्त है।

शिक्षा व संचार के साधनों ने इस सांस्कृतिक एकता को ओर दृढ़ता प्रदान की है जैसे - पंजाबी भोजन, गुजराती भोजन, राजस्थानी भोजन, बंगाली भोजन, दक्षिणी भारतीय भोजन व अन्य कई तरह के भोजन आज क्षेत्र विशेष की पहचान तो हैं ही इसके साथ ही भारत के किसी भी कोने में होने वाले सामाजिक व सांस्कृतिक समारोहों में इनका मिला-जुला रूप खाने-पीने की टेबलों पर नजर आता है। अपने रसास्वादन के साथ-साथ यह भोजन व्यक्तियों के दिलों को और निकट लाता है।

2. चिकित्सा - भारत में कई तरह की चिकित्सा पद्धति अस्तित्व में है - आयुर्वेदिक, यूनानी, ऐलोपेथी, होम्योपेथी आदि। चिकित्सकीय दृष्टिकोण से देखा जाये तो ज्ञात होता है कि भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति सदियों पुरानी है व प्रामाणिक भी है। विशाल जैव विविधता के भण्डारों के कारण पूरे भारत में जड़ी-बूटियाँ उत्पन्न होती हैं। जिस क्षेत्र में जो जड़ी-बूटी पैदा होती है उसे उस क्षेत्र में तो महत्व प्राप्त है ही उसे देश के अन्य भागों में भी भेजकर उसका उपयोग किया जाता है। इसीलिये भारतीय संस्कृति में वृक्षों को देवता का रूप माना गया है। वृक्ष लगाना व उनकी रक्षा करना पुण्य का कार्य माना गया है।

आयुर्वेद ने पूरे देश को जहाँ सांस्कृतिक एकता प्रदान की है वहीं अब विश्व समाज भी इसके महत्व को मान गया है। विविध तरह की जड़ी-बूटियों के लिए भारत विश्व में प्रसिद्ध है। कई असाध्य रोगों के इलाज भारतीय जड़ी-बूटियों द्वारा किये जा सकते हैं, यह तथ्य कई अन्तर्राष्ट्रीय डॉक्टर / चिकित्सक भी स्वीकार कर चुके हैं। अत: कई देश भारतीय जड़ी-बूटियों को पेटेन्ट कानून के अन्तर्गत लाकर उन पर अपना अधिकार जमाने का प्रयास कर रहे हैं जबकि आयुर्वेद के द्वारा भारत हजारों वर्षों से इन वनस्पतियों का उपयोग कर रहा है व इनके उपयोग को प्रतिपादित करता आ रहा है। भारतीय संस्कृति में चिकित्सा को सेवा का रूप माना गया है न कि व्यापार का। भारतीय संस्कृति के अनुसार इस क्षेत्र में किये गये सेवा व शोध कार्यों का प्रतिफल सदैव समाज को मानव सेवा के रूप में मिलना चाहिए न कि व्यापार के रूप में चिकित्सा कार्य किया जाना चाहिये।

3. रहन-सहन - यही बात रहन-सहन में दृष्टिगोचर होती है। भारतीय धोती कुर्ता, पंजाबी सलवार सूट, मुस्लिम भाइयों का पठानी सूट, लखनवी कुर्ता पायजामा, राजस्थानी घाघरा लूगड़ी, गुजराती लहंगा चुनरी आदि आज देश के प्रत्येक कोने में पहनी जाती है। किसी भी समारोह में इस विविधता को एक साथ देखा जा सकता है। भारतीय पुरूष सामान्यत: धोती-कुर्ता व कुर्ता-पायजामा को अपनी प्रमुख परम्परागत वेश-भूषा मानते हैं जबकि साड़ी स्त्रियों की सदियों से परम्परागत वेश-भूषा है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएँ अपनी संस्कृति के अनुसार साड़ी पहनती हैं। बंगाल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, केरल आदि राज्यों में साड़ी पहनने का अपना एक अलग तरीका है। महिलाओं के साड़ी पहनने के तरीके को देखकर ही पता लग जाता है कि वे किस क्षेत्र विशेष की हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर साड़ी को भारतीय महिला के प्रमुख पहनावे के रूप में पहचाना जाता है।

भौगोलिक वातावरण का प्रभाव पहनावे पर किस तरह पड़ता है इसे विशेष रूप से दक्षिण भारत की वेश-भूषा को देखकर समझा जा सकता है। दक्षिण भारत में दक्षिणी कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु में वर्ष के अधिकांश माहों में वर्षा का मौसम रहता है, धरातल पठारी है व छोटी-छोटी नदियों व नालों का जाल सा बिछा है। अत: आवागमन के समय वहाँ के नागरिकों को सदैव जल भरे मार्गों का सामना करना पड़ता है, इस कारण वहाँ पहनावे के रूप में लुंगी को प्रमुखता प्राप्त है और व्यक्ति जूतों की जगह चप्पल पहनता है।

अपनी सांस्कृतिक एकता के अंकुरण छोटे-छोटे बच्चों में बाल्यावस्था में ही उत्पन्न हो जाते हैं, जब वह विभिन्न तरह के परिधान पहनकर इस देश को पहचानने लगते हैं। अपने विद्यालय के समारोहों में विभिन्न क्षेत्रों की वेश-भूषा पहन कर सांस्कृतिक समारोह में प्रस्तुतियाँ देते हैं व स्वयं को एकता के सूत्र में मनकों की तरह पिरो देते हैं।

रीति-रिवाजों के दृष्टिकोण से चाहे जन्म संस्कार हों या विवाह संस्कार आदि, पूरे भारत में इन संस्कारों व रिवाजों में समानता दिखाई देती है। समाज में कन्या को विशेष आदर प्राप्त है। कन्यादान महादान माना जाता है। क्योंकि कन्या भविष्य में समाज में बहन, पत्नी, माँ के रूप में अपनी सृजनात्मक भूमिका निभाती है। स्त्री को भारतीय समाज में कितना महत्व प्राप्त है यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय समाज के आदर्शों में सीता-राम, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके उच्चारणों में भी नारी का नाम पहले लिया जाता है।

4. मेले-त्यौहार - मेले, त्यौहार व लोक कलाएँ भारतीय संस्कृति की ऐसी विशेषताएँ हैं जो सभी को अभिभूत कर देती हैं। भारतीय सदैव उमंग व ऊर्जा से ओत-प्रोत होते हैं। मेले व त्यौहारों में जब भिन्न-भिन्न पंथों व सम्प्रदायों के लोग मिलते हैं मानों भिन्न-भिन्न सरिताओं में बह-बहकर आने वाला जल समुद्र में समा रहा है व एकाकार हो रहा है।

भारत में सभी त्यौहार सभी धर्मों के लोगों द्वारा मिलजुल कर मनाये जाते हैं चाहे वह हिन्दुओं के दीपावली, होली व दशहरा हो, मुस्लिमों के ईदुलफितर, ईदुल जुहा, बारावफात हो, ईसाइयों का क्रिसमस हो, पंजाबियों का लोहड़ी या वैशाखी हो या दक्षिण भारतीयों का पोंगल हो।

इसी तरह सभी महापुरूषों के जन्मदिन व विभिन्न जयन्तियाँ भी सभी वर्गों के लोगों द्वारा मिलकर मनाई जाती हैं। नई फसल के आगमन पर सभी क्षेत्रों में उमंग का वातावरण होता है फिर चाहे वह उत्तर शक्तियों को देवी देवताओं का रूप दिया गया है। नदियों को जीवनदायिनी माना है (क्योंकि सभ्यता का विकास नदी घाटियों में ही हुआ है) अत: इन्हें माँ का रूप माना है। इसीलिये भारतीय संस्कृति में

चित्र 3.1 - भारत : पर्यटन एवं सांस्कृतिक केन्द्र

गंगा, जमुना, नर्मदा, शिप्रा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियों का विशिष्ट स्थान है। इन नदियों के किनारे लगने वाले मेले व मनाये जाने वाले उत्सव इसके प्रमाण हैं। अपने जीवन में प्राकृतिक शक्तियों के सकारात्मक प्रभाव को अनुभव कर भारतीय जनमानस अप्रत्यक्ष रूप में सकारात्मक सोच का जीवन जीना सीख गया है। इस कारण वह आस्तिक भी है व सात्विक भी है। अत: उसमें उदारता, सहनशीलता,

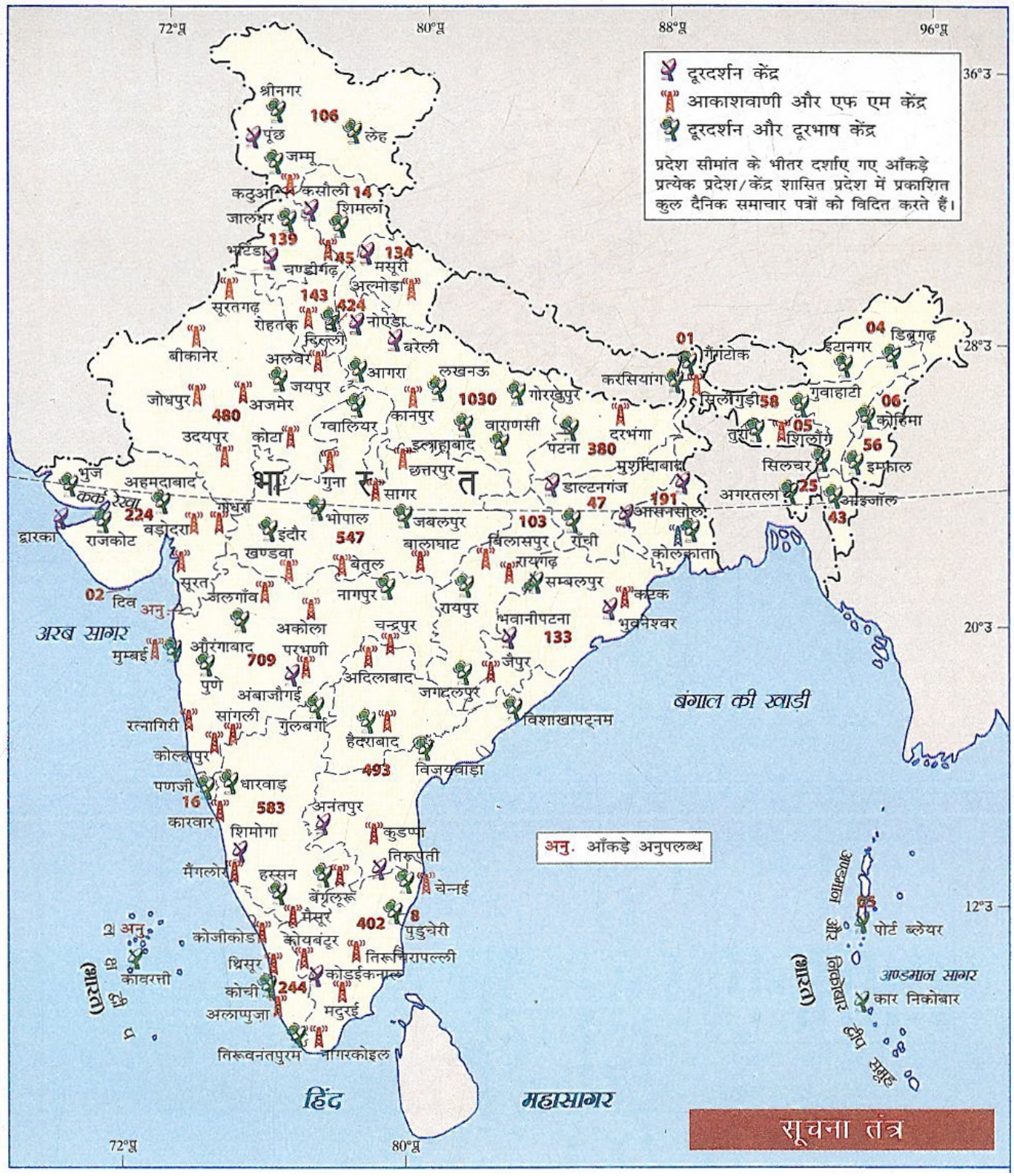

चित्र 3.2 – भारत : सूचना तंत्र

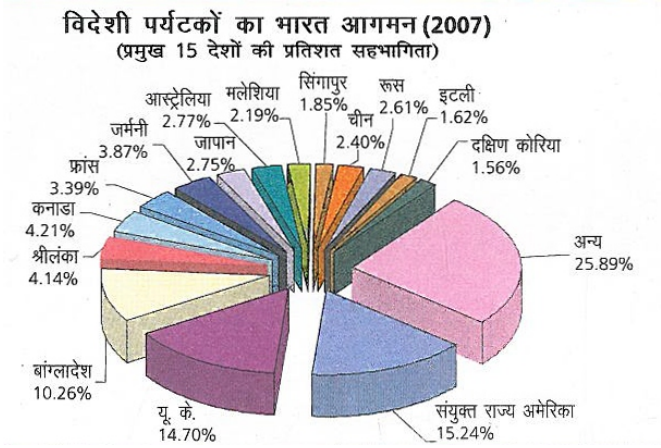

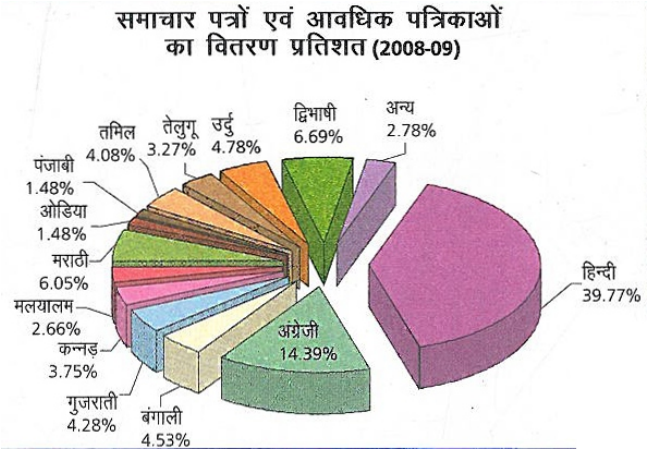

चित्र 3.3 – भारत : पर्यटन व साहित्य

समन्वयवादिता एवं ग्रहणशीलता आदि गुणों का विकास होता गया है।

भारत की सांस्कृतिक एकता में तीर्थ स्थलों का महत्वपूर्ण योगदान है। जो स्थल किसी चिंतक, मनीषी व महापुरूष के जन्म, निर्वाण या अन्य किसी कारण से जुड़ गये हैं, उन्हें पुण्य स्थल या पवित्र स्थल माना गया है। यही स्थान लोगों के जुड़ाव के साथ धीरे-धीरे तीर्थ स्थल बन गये हैं।

इस तरह के तीर्थ स्थल नदियों के किनारे, पर्वतीय क्षेत्रों, समुद्र तटों, गुफाओं व सरोवरों के किनारे बने हुए हैं। देश के चारों कोनों से तीर्थ यात्री वर्ष पर्यन्त यहाँ आते रहते हैं व देश की सांस्कृतिक एकता के ताने बाने को मजबूत करते हैं। भारत के कुछ प्रमुख तीर्थ स्थल निम्नलिखित हैं, इनमें सभी धर्मों के तीर्थ स्थल सम्मिलित हैं।

सप्त सिन्धु (सात पवित्र नदियाँ)– गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु व कावेरी।

पाँच प्रमुख सरोवर – मानसरोवर (हिमालय), कुरूक्षेत्र (पंजाब), गल्ताजी व पुष्कर (राजस्थान) तथा पम्पा सरोवर (दक्षिण भारत)।

प्रमुख गुफाएँ – अजन्ता-एलोरा व एलिफैन्टा (महाराष्ट्र), बाघ (मध्य प्रदेश), उदयगिरि, खान्डगिरि (उड़ीसा)।

प्रमुख तीर्थ नगर – वाराणसी, हरिद्वार, अयोध्या, प्रयाग, अजमेर (पुष्कर), उज्जैन, मथुरा, नासिक, अमृतसर, पटना, द्वारका, सारनाथ, नालंदा, सांची आदि।

पर्वतीय क्षेत्रों के तीर्थ स्थल – कैलाश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, जमनोत्री, गंगोत्री, पावागढ़, पालिताणा, सम्मेदशिखर, गिरिनार पर्वत, पावापुरी, देलवाड़ा, रणकपुर आदि।

शंकराचार्य के चार मठ – ज्योतिर्मठ (हिमालय), श्रृंगेरी मठ (मैसूर), शारदा मठ (द्वारका) तथा गोवर्धन मठ (पुरी)।

चार धाम – बद्रीनाथ, द्वारकापुरी, जगन्नाथपुरी व रामेश्वरम्।

तीर्थ स्थल भारतीय सांस्कृतिक एकता के प्रमुख ताने बाने हैं। चार मठ चारों दिशाओं की मजबूती के प्रतीक हैं। चार धाम स्थापित होने का सबसे बड़ा लाभ यह रहा है कि देश के सभी क्षेत्रों से लोग यहाँ वर्षभर आते रहते हैं। लोगों का यहाँ एकत्रित होते रहना प्रत्यक्ष रूप से सर्वोच्च सत्ता के दर्शन व उसके अस्तित्व के प्रति लोगों का समर्पण भाव प्रदर्शित करता है जबकि अप्रत्यक्ष रूप से देश अपनी एकीकृत सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है।

नदियों के किनारे, पर्वतीय क्षेत्रों व गुफाओं में स्थापित तीर्थ स्थल समाज को प्रकृति के समीप ले जाते हैं। चारों ओर बिखरी प्राकृतिक छटा से मानव के मन में प्रकृति व उसको बनाने वाले के बारे में सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। यही विचार मानव को जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सहायक होते हैं, जैसे – नदियाँ – नदियों के बारे में व्यक्ति सोचता है कि यह मेरी नदी है। यह विचार उसके मन में तब तक रहता है जब तक वह नदी को अपने गाँव अथवा नगर के समीप देखता है। जब वह तीर्थ स्थल के रूप में उसी नदी को कई जगह महत्वपूर्ण पाता है तो उसके मन में विचार आता है हमारी नदी अथवा हमारी नदियाँ। ये ही नदियाँ जब कई क्षेत्रों व राज्यों में से होकर गुजरती हैं तो देश की नदियाँ बन जाती हैं। यही विचार व्यक्ति को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने की सोच प्रदान करता है। व्यक्ति की सोच मैं की जगह हम में बदल जाती है व सभी जगह देश प्रमुख हो जाता है, जैसे – मेरी नदी से हमारी नदी व मेरा देश की जगह हमारा देश की भावना बलवती होती है। यही भावना पर्वतों के लिये भी समान रूप से उत्पन्न होती है।

यही भाव जो मैं की जगह हम के रूप में अंकुरित होता है यही भारतीय संस्कृति की एकता का भाव है। इस भाव के मजबूत होते रहने पर नदी जल विवाद जैसे विषय स्वत: समाप्त हो जाते हैं। कारण देश की नदियों का जल देश के सभी नागरिकों के विकास में सहायक है। जैसे माँ अपने सभी पुत्रों का लालन पालन समान

दृष्टि से और प्यार से करती है, उसी प्रकार नदियाँ जो हमारी माँ के रूप में है उनका आशीर्वाद सभी को समान रूप से मिले यह भावना बलवती होती है।

अन्त में कहा जा सकता है कि भारत अपने विशाल आकर एवं विशिष्ट अवस्थिति के कारण भौगोलिक विविधताओं का खजाना समेटे हुए है जिस कारण यहाँ जन-जीवन में विविधता दिखाई देती है, लेकिन अपनी विशिष्ट संस्कृति के कारण भारत एक राष्ट्र के रूप में विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान सदियों से बनाये हुए है। अपनी सभ्यता-संस्कृति व दर्शन के कारण भारत को विश्व में गुरू का स्थान प्राप्त है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. भूगोल मानव शरीर की बनावट व उसकी सोच दोनों को प्रभावित करता है।
2. किसी क्षेत्र की सभ्यता व संस्कृति के निर्माण में उस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान होता है।
3. संस्कृति का अर्थ है संस्कारयुक्त होना, परिमार्जित होना तथा ऐसे कार्य करना व विचार अपनाना जो स्वयं व दूसरों के लिए जीवनदायी हो।
4. भारत की पहचान शाकाहारी समाज के रूप में है।
5. भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति सदियों पुरानी एवं प्रामाणिक है।
6. विविध तरह की जड़ी बूटियों के लिए भारत विश्व में प्रसिद्ध है।
7. भारत में धोती-कुर्ता व कुर्ता-पायजामा पुरूषों की व साड़ी स्त्रियों की परम्परागत वेशभूषा है।
8. बैशाखी पंजाबियों का प्रमुख त्यौहार है।
9. संस्कृत भाषा के शब्द भारत की लगभग सभी भाषाओं में पाये जाते हैं।
10. वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि भारतीय संस्कृति के प्रमुख ग्रन्थ है।
11. भारतीय संस्कृति में नदियों को माता के रूप में माना व पूजा गया है।
12. चार मठ व चार धाम देश की सांस्कृतिक एकता के प्रतीक रहे हैं।
13. तीर्थ स्थलों ने भारत, भारतीयता व भारतीय संस्कृति को अप्रत्यक्ष रूप से एक सूत्र में पिरोया है।
14. भारतीय संस्कृति में वृक्षों को देवता का रूप माना गया है। वृक्ष लगाना व उनकी रक्षा करना पुण्य का कार्य माना गया है।
15. अपनी सहिष्णुता, सहनशीलता, उदारता, समन्वयवादिता एवं आध्यात्मिक ज्ञान के कारण भारत को विश्व गुरू माना जाता है।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. सप्त सिन्धु में जितनी नदियाँ शामिल हैं, वे हैं -
   (अ) सत्रह (ब) सौ
   (स) ग्यारह (द) सात।
2. भारत की मूल चिकित्सा पद्धति है -
   (अ) एलोपेथी (ब) होम्योपेथी
   (स) आयुर्वेदिक (द) यूनानी।
3. बैशाखी जिस राज्य का प्रमुख त्यौहार है, वह है -
   (अ) मध्य प्रदेश (ब) बिहार
   (स) आन्ध्र प्रदेश (द) पंजाब।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

4. संस्कृति का क्या अर्थ है?
5. वेद-पुराण किस भाषा में लिखे गये हैं?
6. शंकराचार्य के चार मठ कौन-कौन से हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

7. तीर्थ स्थल किसे कहते हैं व कैसे बनते हैं?
8. भूगोल खान-पान को कैसे प्रभावित करता है?
9. सप्त सिन्धु तथा पाँच सरोवरों के नाम बताइये।

निबन्धात्मक प्रश्न -

10. ''भौगोलिक विविधता में सांस्कृतिक एकता'' पर निबन्ध लिखिए।
11. सांस्कृतिक एकता में तीर्थ स्थलों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरमाला - 1. द 2. स 3. द